इस प्रकार व्यवस्थित हैं जिससे मनुष्य भगवत्परायण जीवन की कृतार्थता को प्राप्त हो जाय। ब्रह्मचारीगण सद्गुरु के आश्रय में रहते हुए इन्द्रियतृप्ति का परिहार कर मन को वश में करते हैं। इस श्लोक के अनुसार वे श्रवण आदि क्रियाओं का और इन्द्रियों का चित्तसंयमरूपी अग्नि में यजन करते हैं। ब्रह्मचारी के लिए कृष्णभावना सम्बन्धी शब्द ही सुनने योग्य हैं। श्रवण ज्ञान की कुञ्जी है। इसलिए शुद्ध ब्रह्मचारी **हरेर्नामानुकीर्तनम्** अर्थात् भगवत्-कीर्तन-श्रवण में पूर्ण मग्न रहता है। वह लौकिक वार्ता को नहीं सुनता; उसकी श्रवणेन्द्रिय **हरे कृष्ण हरे कृष्ण** के श्रवण में ही तत्पर रहती है। इन्द्रियभोग करने की सीमित छूट होते हुए भी गृहस्थ अत्यन्त मर्यादित विषयभोग में प्रवृत्त होते हैं। मैथुन-परायणता, मादक पदार्थ सेवन और मासाहार मानव समाज की सामान्य वृत्तियाँ हैं। परन्तु संयमी गृहस्थ मैथुन आदि विषयभोगों में अनियन्त्रित रूप से प्रवृत्त नहीं होता। इसी उद्देश्य से प्रत्येक सभ्य मानव समाज में धर्मविवाह का प्रचलन है। यह सयमित, आसक्तिरहित काम भी एक प्रकार का यज्ञ है, क्योंकि इसके माध्यम से संयमी गृहस्थ अपनी विषयभोगोन्मुखी सामान्य प्रवृत्ति का परमार्थ के लिए यजन करता है।

5/5

सर्वाणीन्द्रियकर्माणि प्राणकर्माणि चापरे।
आत्मसंयमयोगाग्नौ जुह्वति ज्ञानदीपिते।।२७।।

सर्वाणि=सब; **इन्द्रिय**=इन्द्रियों की; **कर्माणि**=क्रियाओं का; **प्राणकर्माणि**=प्राण-क्रियाओं का; **च**=भी; **अपरे**=दूसरे; **आत्मसंयम**=मनोनिग्रह; **योग**=प्राप्तिपथ; **अग्नौ**=अग्नि में; **जुह्वति**=अर्पण करते हैं; **ज्ञानदीपिते**=स्वरूप-साक्षात्कार की जिज्ञासा से युक्त।

अनुवाद

दूसरे, जो मन और इन्द्रियों का संयम कर के स्वरूप-साक्षात्कार करना चाहते हैं, वे सम्पूर्ण इन्द्रिय और प्राण क्रियाओं का चित्तसंयमरूपी अग्नि में यजन करते हैं।।२७।।

तात्पर्य

इस श्लोक में पंतजलि द्वारा प्रणीत योगपद्धति का निर्देश है। पतंजलि के 'योगसूत्र' में आत्मा को 'प्रत्यगात्मा' एवं 'परगात्मा' कहा गया है। जब तक जीवात्मा विषयासक्त रहता है, तब तक उसे 'परगात्मा' कहा जाता है। जीवमात्र के अन्तर में दस प्राण सक्रिय रहते हैं, जो श्वास-प्रक्रिया द्वारा अनुभवगम्य हैं। पातंजल योगदर्शन देह में स्थित प्राण की सम्पूर्ण क्रियाओं को वश में करने की विधि सिखाता है, जिससे ये सब प्राण-क्रियाएँ विषयासक्ति से जीवात्मा के शुद्धिकरण में सहायक हो जायँ। इस योगपद्धति के अनुसार प्रत्यगात्मा ही परम लक्ष्य है। यह प्रत्यगात्मा प्राकृतिक क्रियाओं का प्रत्याहार है। इन्द्रियाँ इन्द्रियविषयों के साथ अन्तर्क्रिया करती हैं, जैसे श्रवण के लिए श्रोत्र, दर्शन के लिए नेत्र, गन्ध के लिए घ्राण